Chap-2

द्वितीय अध्याय

हिन्दी व्यंग्य निबंध : स्वरूप एवं विकास

व्यंग्य निबंध : स्वरूप चिंतन

साठोत्तर पूर्व हिन्दी व्यंग्य निबंध का विकास

भूमिका
भारतेन्दु युग (सन् 1850 से 1900 तक)
द्विवेदी युग (सन् 1900 से 1920 तक)
शुक्ल युग (सन् 1920 से 1947 तक)
स्वतंत्र्योत्तर युग (सन् 1947 से 1960 तक)
निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय

हिन्दी व्यंग्य निबंध : स्वरूप एवं विकास

व्यंग्य निबंध : स्वरूप चिंतन

हिन्दी का अधिकतम व्यंग्य साहित्य प्राय: निबंध के रूप में द्रष्टिगत होता है। हिन्दी के निबंधो में व्यंग्यात्मक विषयों का जो विस्तार हुआ है, उतना अन्य विधाओं में नहीं मिलता।

"आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने निबन्ध को गद्य की कसौटी माना है। निबन्ध का एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है - 'वैचारिकता या बौद्धिकता और व्यंग्य बिना वैचारिकता या बैद्धिकता के लिखा नहीं जाता। व्यंग्य और निबन्ध एक दूसरे के विकल्प हैं यह कहना अत्युक्तिपूर्ण नहीं होगा। यदि निबन्ध गद्य की कसौटी है तो निबन्ध की कसौटी व्यंग्य है।"[1]

व्यंग्य निबन्ध को स्पष्ट करते हुए डॉ. शेरजंग गर्ग लिखते हैं - "व्यंग्य निबन्ध को व्यंग्य की रम्य रचना की संज्ञा दी जा सकती है। यह निबंध यद्यपि किसी एक विषय से पूर्णत: वंधा होता है मगर इस संबंध में स्वच्छन्दता का उपयोग करता हुआ व्यंग्यकार उसे अपने मनचाहे बंधन में ही बाँधता है। यही कारण है कि इसका विकास उत्फुल्लता के साथ ही विसंगतियों को वर्णित भी करता है।"[2]

डॉ. शेरजंग गर्ग ने व्यंग्यकार की स्वच्छन्दता और वैयक्तिकता को व्यंग्य निबंध में आवश्यक माना है। इनका यह भी कहना है कि इन्ही तत्त्वों की सहायता से व्यंग्यकार व्यंग्य निबंध में विसंगतियों का पर्दाफाश करता है।

डॉ. उषा शर्मा ने व्यंग्य निबंध को व्यंग्यकार के विचारों की मुक्त अभिव्यक्ति माना हैं और लिखा हैं कि - "व्यंग्य निबंधकार, अनिबन्ध, नया निबंध, निबंध-विहीन निबंध के शिल्प और अशिल्प की झंझटों से मुक्त है। वह अपने शिल्प शैली और विचारों की अभिव्यक्ति के लिए स्वतंत्र है। आज भी वह पाठक के समक्ष विशुद्ध व्यंग्य-निबंधकार के रूप में खड़ा है।"[3]

अत: स्पष्ट है कि डॉ. शर्मा ने व्यंग्य निबंध को विषय और शैली की दृष्टि से स्वच्छन्द माना है और इस में वैयक्तिकता जैसे तत्त्व की प्रधानता पर भार दिया गया है जो निबंधों का प्राणभूत तत्त्व है।

डॉ. आनंद प्रकाश गौतम ने व्यंग्य निबंध को विविध क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों पर प्रहार करनेवाली रचना माना है। "व्यंग्य-निबंध एक ऐसी गद्यमय साहित्यिक अभिव्यक्ति या रचना है, जिसके द्वारा विश्व दृष्टि युक्त रचनाकार व्यक्ति-विशेष की दुर्बलताओं से लेकर राष्ट्रीय और आन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक हर प्रकार की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक-साहित्यिक और सांस्कृतिक जीवन में व्याप्त विसंगतियों और विद्रुपताओं की कटु आलोचना कभी भाषा को टेढ़ी भंगिमा देकर और कभी सीधे-साधे सापाट शब्दों में प्रहार करते हुए करता है।"[4]

निष्कर्षतः विविध विद्वानों द्वारा आदिष्ट व्यंग्य निबंध की स्वरूपगत विशेषताओं को निम्नांकित रूप से स्पष्ट किया जा सकता है।

1) व्यंग्य निबंध हिन्दी साहित्य का गद्यमय संक्षिप्त स्वरूप है।
2) व्यंग्य निबंध में विषय का बन्धन नहीं होता, निबन्धकार सामान्य से लेकर उच्च कोटि के व्यक्ति या वस्तु पर व्यंग्य कर सकता है।
3) व्यंग्य निबंध में भाव तत्त्व से अधिक विचार तत्त्व की प्रधानता रहती है।
4) व्यंग्य निबंध में यथार्थ का चित्रण और विसंगतियों पर प्रहार किया जाता है।
5) व्यंग्य निबंध की भाषा में वक्रता तथा प्रहारात्मकता और शैली में विविधता पायी जाती है।
6) व्यंग्य निबंध का उद्देश्य सुधार करना है।

व्यंग्य निबंध की स्वरूपगत विशेषताओं के आधार पर इसके रूप विधायक तत्त्व निर्धारित किये जा सकते है। व्यंग्य तथा व्यंग्य निबंध में निहित तत्त्वों में लगभग काफी समानता है। वस्तुतः व्यंग्य निबंध के वे ही तत्त्व है जो व्यंग्य के अंतर्गत प्रथम अध्याय द्वारा विवेचित किये गये हैं।

व्यंग्य निबंध का विश्लेषण तात्त्विक दृष्टिकोण से किया जाये तो इसके तत्त्व इस प्रकार होते है। जैसे - (1) विसंगतियों का यर्थाथ चित्रण, (2) आलोचनात्मक प्रहार, (3) हास्य का चित्रण, (4) सुधार की भावना, (5) बैद्धिकता, (6) संक्षिप्तता, (7) भाषा-शैली। इसके अतिरिक्त वैयक्तिकता, स्वच्छन्दता तथा तटस्थ विश्लेषण जैसे तत्त्व भी महत्त्वपूर्ण हैं।

व्यंग्य निबंध के स्वरूप और विषय के आधार पर इसके प्रकार का

वर्गीकरण किया जा सकता है। व्यंग्य तथा व्यंग्य निबंध के प्रकार में काफी समानता है। व्यंग्य के जो प्रकार की चर्चा प्रथम अध्याय के अंतर्गत की है प्रायः उसी तरह व्यंग्य निबंध के भी प्रकार है।

साठोत्तर पूर्व हिन्दी व्यंग्य निबंध का विकास

भूमिका

आदिकाल से लेकर आधुनिक काल के विविध कालखंडो में व्यंग्य की चेतना पाई गयी है। "नाथ संप्रदाय के काव्य में व्यंग्य का अस्तित्व मिलता है। सरोजवज्र (सरहपा) विद्वान कवि ने पाखंड और आड़म्बर का विरोध कर वैदिक विधानों पर व्यंग्य प्रहार किये है।"[5]

भक्तिकाल में कबीर ने धार्मिक एवं सामाजिक विसंगतियों पर तीखा व्यंग्य प्रहार किया है तथा रीतिकाल में कई दरबारी कवियों ने व्यंग्यात्मक रचनाएँ की है, किन्तु इन काल खंडों में जो व्यंग्य मिलते हैं वे पद्य के रूप में हैं। गद्य का पूर्णतः अभाव तो न था, फिर भी पद्य साहित्य की तुलना में गद्य साहित्य कम लिखा गया है। आधुनिक काल में आते-आते व्यंग्य का परिमार्जित रूप हमारे सामने आया और व्यंग्य एक विधा के रूप में स्थापित हुआ।

भारतेन्दु युग में जिस तरह गद्य की विविध विधाओं का विकास हुआ है, उसी तरह इस युग में पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से व्यंग्य निबंध का भी विकास हुआ। अतः यह युग हिन्दी व्यंग्य निबंध साहित्य का प्रथम सोपान माना जा सकता है। भारतेन्दु काल में भारत अंग्रेजों का गुलाम था। देश की सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था ठीक नहीं थी। जातिवाद, कुरीतियाँ, कर्मकांड, पाखंड, ऊँच-नीच के भेद-भाव आदि का प्रमाण अधिक था। ऐसी स्थिति में व्यंग्य करना उचित था। पद्य के स्थान गद्य की प्रधानता में इस विधा का शुभारंभ हुआ। द्विवेदी युग में 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से इस विधा को वेग मिला और शुक्ल युग की पांडित्यपूर्ण शैली से इसको साहित्यिक रूप प्राप्त हुआ। यहाँ निम्नलिखित रूप से हिन्दी व्यंग्य निबंध साहित्य के विकास पर विहंगावलोकन किया जा रहा है।

1) भारतेन्दु युग (सन् 1850 से 1900 तक)

2) द्विवेदी युग (सन् 1900 से 1920 तक)
3) शुक्ल युग (सन् 1920 से 1947 तक)
4) स्वातंत्र्योत्तर युग (सन् 1947 से 1960 तक)
5) साठोत्तर युग (सन् 1960 से आज तक)

1) भारतेन्दु युग (सन् 1850 से 1900 तक)

सर्वप्रथम हिन्दी व्यंग्य की एक सुव्यवस्थित धारा हमें भारतेन्दु युग में ही दृष्टिगत होती हैं। इस समय देश की राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थिति दयनीय थी। देश में अंग्रेजों का शासन था और भारतीय जनता के मन में क्रान्ति की आग जल रही थी। विदेशी सभ्यता, अंग्रेजी शिक्षा, पाश्चात्य कला, पाश्चात्य धर्म का फैलावा हो रहा था। भारतीय जनता को मजबूरन ईसाई बनाया जाता था। ऐसी दारूण परिस्थिति से देश गुजर रहा था। डॉ. शान्ति प्रसाद वर्मा लिखते हैं कि - "भारतेन्दु युग में पश्चिम से एक ऐसी वायु वही थी, जिसने समस्त भारतीय जन-जीवन को प्रभावित किया था। अनेक विनाशकारी रूढ़ियों को उखाड़ दिया गया और उनके स्थान पर नवीन-विचार बीज बो दिये गये। भारतीय चेतना जागी और समाज में सर्वत्र ही सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक नवांकुर फूट उठा। जीवन के सभी क्षेत्रों में क्रान्तिकारी परिवर्तन होता दिखाई देने लगा। हम हजारों वर्ष से जिन खूँटों से बँध रहे थे, वे एकाएक लुप्त हो गये और भारतीय समाज ने अपनी शक्ति, अपने गौरव और अपनी महान विरासत में लगी जंग को पहचाना। भारतेन्दु युग उस विचार धारा का प्रथम उद्‌धोषक था।"[6] भारतीय शिक्षा प्रणाली में अंग्रेजी शिक्षा के कारण साहित्य जगत की पृष्ठ भूमि में परिवर्तन हुआ। डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी ने भारतेन्दु युग के साहित्यकारों की परिस्थिति को वर्णित करते हुए लिखा है कि - "मानसिक अवस्थान की दृष्टि से देखा जाय तो यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि इन लेखकों के मन में एक घुटन थी और वह चाहती थी निकलना। ब्रिटिश शासन में खुशामदियों का बोलबाला था। धार्मिक ठेकेदारो की तूती बोलती थी, प्रेस ऐक्ट का भूत हर दम सिर पर सवार रहता था। हास्य एवं व्यंग्य के सहारे उन लोगों ने अपने मन का असंतोष प्रकट किया।"[7]

प्रस्तुत युग के व्यंग्य निबंधो में तत्कालीन परिस्थिति का भीषण सत्य चित्रित हुआ है। 'हिन्दी प्रदीप', 'हरिश्चन्द्र मैगजीन', 'ब्राह्मण', 'भारत मित्र', 'वैष्णव-पत्रिका', 'हिन्दुस्तान', 'सुधाकर', 'बनारस अखबार', 'कवि वचन सुधा' आदि पत्र पत्रिकाओं का व्यंग्य निबंध के विकास में बहुत बड़ा योगदान रहा हैं।

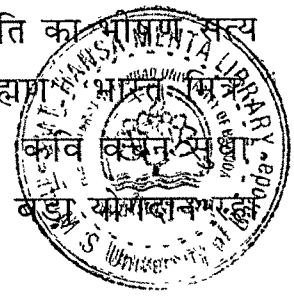

केवल मनोरंजन करना ही व्यंग्य प्रधान निबंधों का उद्देश्य न रह कर देश में छिपी विसंगतियों एवं विद्रूपताओं को उधेड़ना था। इन युग के साहित्यकारों का मूल आशय साहित्य के माध्यम से राष्ट्रीय जन जागरण की भावना को जागृत करना था। भारतेन्दु युग में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, पं.बालकृष्ण भट्ट, पं. प्रतापनारायण मिश्र, पं. बदरीनाथ नारायण प्रेमधन, बालमुकुन्द गुप्त , राधाचरण गोस्वामी, मधुसूदन गोस्वामी जैसे व्यंग्य निबंधकारों ने अपना योगदान दिया हैं।

भारतेन्दु युगीन व्यंग्य निबन्धकार

1) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

भारतेन्दु के निबंधों में व्यंग्य की सूक्ष्म एवं प्रत्यक्ष धारा प्रवाहित होती हैं। कहीं-कहीं पर इन्होंने प्रायः हास्य प्रधान निबंधों की भी सृष्टि की हैं। इनके निबंधों में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जैसे विषयों पर व्यंग्य मिलता हैं। इनके व्यंग्य निवंध आक्षेप, विरोध, आलोचना, परिहास आदि गुणों से युक्त हैं।

'कंकड स्तोत्र' निबंध में कंकड जैसी सामान्य वस्तु पर रोमांचित और भावात्मक व्यंग्य किया है। इसमें अर्थगत् व्यंग्य दृष्टिगत होता है। "कंकड देव को प्रणाम है देव नहीं महादेव क्योंकि काशी के कंकड शिव शंकर समान है।।1।।"[8] "आहा! जब पानी बरसता है तब सड़क रूपी नदी में आप द्वीप से दर्शन देते हैं। इस से आप के नमस्कार में सब भूमि को नमस्कार हो जाता है।।11।।"[9]

'अंग्रेजी स्तोत्र' निबंध में अंग्रेजों की स्तुति मिलती है। यहाँ पर व्यंग्य प्रत्यक्ष न होकर अप्रत्यक्ष है। 'मदिरा स्तोत्र' निबंध में मदिरा और मद्यपान पर सुन्दर व्यंग्य किया है। इन निबंधों में भारतेन्दुजी ने 'स्तोत्र शैली' का प्रयोग किया है।

'लेवी प्राण लेवी' में काशी में सरकार का जो दरबार था, उसमें वहाँ के रईसों की क्या दशा होती है उस पर राजनीतिक व्यंग्य 'स्केच शैली' में किया है। 'स्वर्ग में विचार सभा का अधिवेशन' केशवचंन्द्र सेन तथा दयानंद सरस्वती पर आक्षेप किये है, जो कल्पना परक शैली में लिखा गया व्यंग्य निबंध है। 'पांचवे पैगंबर', 'सर्वे जाति गोपाल की' और 'जाति विवेकनी सभा' जैसे निबंधो में संवादवाली नाटकीय शैली (वार्तालाप शैली) द्वारा व्यंग्य प्रस्तुत किया है। 'स्त्री सेवा पद्धति' में स्त्रियों के गुण दोषों का इस प्रकार व्यंग्यात्मक विवेचन किया है -"इस दिव्य स्तोत्र पाठ से तुम हम पर प्रसन्न हो। समय पर भोजनादि दो। बालकों की रक्षा करो। भृगुटी धनु के सन्धान में हमारा कहा मत करो और हमारे जीवन को अपने कोप से कंटकमय मत बनाओ।"[10]

शैली की दृष्टि से भारतेन्दुजी के व्यंग्य निबंधों में नयापन है। भाषा भी विषयानुकूल है। संस्कृत गर्भित तथा चलती हुई बोलचाल की भाषा के प्रयोग के साथ अंग्रेजी और उर्दू भाषा के शब्दों का प्रयोग भी इनके व्यंग्य निबंधों में मिलता है। समास प्रधानता के साथ मुहावरेंदार अत्यंत सजीव प्रयोग भी मिलता है। भाषा में कहीं-कहीं शब्द क्रीडा या चमत्कार की प्रवृत्ति मिलती है।

भारतेन्दु के निबंधों में विनोद के साथ अर्थ गांभीर्य दृष्टिगत होता है। अंग्रेजों की नीति और स्वार्थ, धर्म, समाज, कुण्ठा, आचार-विचार, संस्कृति आदि पर भारतेन्दुजी ने व्यंग्य प्रहार किये हैं। इनके व्यंग्य निबंधों में युगीन परिस्थिति की झलक दिखाई देती हैं।

2) पं. बालकृष्ण भट्ट

इस युग में भट्टजी ने सर्वाधिक व्यंग्य निबंध लिखे हैं। अंग्रेजी भाषा, अंग्रेजी नीति, भ्रष्टाचार, सामाजिक कुसंस्कार, अनाचार, धार्मिक रूढ़ियाँ, पुलिस का प्रजा के प्रति दुरव्यवहार आदि को व्यंग्य का विषय बनाया हैं। भट्टजी ने हास्य-व्यंग्य निबंध में बड़े ही विचित्र विषयों का चुनाव किया है।

'हाकिम और उनकी हिकामत' निबंध में हाकिमों की पक्षपात नीति, शोषकता और विलासिता पर करारा व्यंग्य किया है। "हे महामहिम! हाथी के दिखाने वाले दाँत के भाँति फ्री ट्रेड आपकी गूढ़ पालिसी के मर्म को कौन बता सकता है। आपके हुकूम एकहाम आईन कानून जिनमें अपनी हिकमत भरी हुई है, इंग्लैण्ड जैसे सभ्य देश के लिए सब तरह उपयुक्त है , इन्डिया के सीधे-

सादे सरल मनुष्यों के लिये असह्य होती जाती है।"[11]

भट्टजी ने 'बात', 'हुक्का स्तवम्', 'चली सो चली' जैसे व्यंग्य निबंधों में शब्द क्रिडा का ऐसा चमत्कार बताया है कि अनायास ही हास्य फूट पड़ता है। दवाइयों के नुस्खों के रूप में व्यंग्य का सृजन किया है। 'सभ्यता बट्टी' नामक व्यंग्य निबंध में भारतीय सभ्यता का त्याग करके, अंग्रेजीपन किस तरह अपनाया जायें, इसका 'नुस्खा शैली' में वर्णन किया है। "कोई कैसा भी असभ्य हो, नीचे लिखे अनुसार एक महिना लगातार इसके सेवन से सभ्य हो जायेगा, अंगरेजी कपड़ा पहिने, हैट और चश्मा लगावे। इंगलिश क्वार्टर में रहे। जहाँ तक बने अंगरेजी शब्दों का व्यवहार करें। घरवाली को साथ ले साँझ को बाहर हवा खाने जाय। खूब शराब पिये। अपने को हिन्दु कहते शरमाय। हाथ में एक डिब्बी, एक बाइबिल।"[12]

भट्टजी के निबन्ध में अरबी तथा फारसी जैसी विदेशी भाषा के शब्दों का प्रयोग मिलता है। उर्दू के रंग-ढंग, ब्रज का स्वर और पूरबीपन मिलता है। शैली की दृष्टि से भट्टजी के व्यंग्य निबंधों मे विविधता रही है।

'संसार महा नाट्यशाला' में संसार की विसंगतियों पर व्यंग्य किया है। 'पुरूष अहेरी की स्त्रियाँ', 'दंभाख्यान', 'नाक निगोड़ी की बूरी बला है', 'खटका', 'दिल बदलाव के जुदे-जुदे तरीके', 'चलन की गुलामी', 'एक इंग्लिशाइण्ड नये मित्र की मुलाकात', 'भकुआ कौन है', 'अकिल अजीरन रोग', 'ईश्वर क्या ही ठठोल है', 'गदहे में गदहापन क्या है', 'इंगलिश पढ़ें सो बाबू होय' जैसे व्यंग्यात्मक निबंध भट्टजी ने लिखे हैं।

3) पं. प्रतापनारायण मिश्र

मिश्रजी 'ब्राह्मण' नामक पत्र के संपादक थे। जिसमें अकसर उनके निबंध प्रकाशित होते रहते थे। 'प्रताप पियूष', 'प्रताप समीक्षा', 'निबंध नवनीत', 'प्रताप नारायण ग्रन्थावली' आदि में इनके व्यंग्य निबंध संग्रहित है। मिश्रजी के निबंधों में विषय की प्रधानता न होकर व्यक्ति की प्रधानता मिलती है। मिश्रजी ने तत्कालीन परिस्थिति, बह्याडंबर, पाखंड, धर्म के नाम पर अंधविश्वास, अंधा विदेशीपन आदि विषयों पर व्यंग्य प्रहार किया है।

समाज के जो बड़े अहंमन्य लोग हैं, जो खुद सुधरने का नाम नहीं लेते और दुनिया सुधारने चले है ऐसे लोग पर व्यंग्य करते हुए लिखते है - 'घर की

मेहरिया कहा नहीं मानती, चले है दुनियाभर को उपदेश देने; घर में एक गाय नहीं बाँधी जाती, गौरक्षीणि सभा स्थापित करेंगे; तन पर एक सूत देशी कपड़े का नहीं है, बने है देश हितैषी.....।"[13]

'पढ़े लिखों के लक्षण' नामक व्यंग्य निबंध में मिश्रजी ने फैशन परस्त लोगों की व्याज-स्तुति की है तथा विदेशी शिक्षा और विलायत गमन पर वड़ा ही हास्यपूर्ण व्यंग्य किया है। 'धोखा' निबंध में जीव, जगत, ईश्वर की चर्चा करते हुए विभिन्न तर्कों को प्रस्तुत कर सारे जगत को 'धोखामय' बताया हैं।

मिश्रजी ने अपने व्यंग्य निबंधों में समाज को नैतिक शिक्षा प्रदान की है। मुहावरों, कहावतों, लोकोक्तियों, ग्रामीण शब्दों के द्वारा व्यंग्य को आत्मीयता प्रदान की है। चलती-फिरती बोली, अरबी-फारसी तथा अंग्रेजी शब्दों का यथा स्थान प्रयोग मिलता है। इनकी भाषा कुनैन की गोली पर शक्कर जैसी है। श्लेष और कहावतों का तारतम्य हास्योद्वैग का प्रमुख साधन बना है। इनके व्यंग्य निबंध में प्रयुक्त शिष्ट भाषा का उदाहरण इस प्रकार से है - "जब जड़ वृत्त आम बैराते हैं तब आम खास सभी के बैराने की क्या बात है।"

मिश्रजी के व्यंग्य निबंध में संवाद शैली, कहावत और मुहावरां युक्त शैली, अलंकारिक शैली, कथोपकथन शैली, परिहासात्मक शैली का प्रयोग मिलता है। भट्टजी की तरह मिश्रजी को भी शीर्षक का आकर्षण था। इनके व्यंग्य निबंधों का शीर्षक कहावतों और मुहावरों के आधार पर रहा है। मिश्रजी के व्यंग्य निबंधों में विषय के साथ-साथ भाषा-शैली का वैविध्य देखने को मिलता है।

4) बालमुकुन्द गुप्त

'भारत प्रताप', 'अवध-पंच' तथा 'नया जमाना' आदि पत्रों से बालमुकुन्द गुप्त लेखक के रूप में जुड़े रहे। गुप्तजी के सम्बन्ध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल अपने हिन्दी साहित्य के इतिहास में लिखतें है - "वे अपने विचारों को विनोदपूर्ण वर्णनों के भीतर ऐसा लपेटकर रखते थे कि उनका आभास बीच-बीच में ही मिलता था। उनके विनोदपूर्ण वर्णनात्मक विधान के भीतर विचार और भाव लुके छिपे से रहते थे।"

गुप्तजी का व्यंग्य मुख्यत: राजनीतिक रहा है। 'शिव शंभु के चिट्ठे' नाम से गुप्तजी ने निबंध लिखे है। 'शिव शम्भु' कल्पित नाम है। इस संग्रह में

विदेशी शासन, अंग्रेज अधिकारियों द्वारा किया भारत विरोधी कार्य, अंग्रेजों की भेद नीति, भारतीयों की गुलामी एवं लाचारी पर व्यंग्य मिलता है। गुप्तजी ने अंग्रेजी शासक लोर्ड कर्जन के शासन काल में भारतीय जनता की दुर्दशा को अपने आठ चिट्ठों में प्रकट किया है। इन चिट्ठों में देश की राजनीतिक गुलामी और लोर्ड कर्जन की निर्मम क्रूरताओं को प्रस्तुत किया है। अंग्रेजों के इस क्रूर प्रशासनिक क्षेत्र की कमजोरियों पर व्यंग्य किया गया है। शिव शंभु के आठ चिट्ठों का नाम इस प्रकार हैं - 'बनाम लार्ड कर्जन', 'श्रीमान का स्वागत', 'वैसराय कार्तव्य', 'पीछे मत फेंकिये', 'आशा का अंत', 'एक दुराशा', 'बिदाई-सम्भाषण', 'बंग-विच्छेद'।

लोर्ड कर्जन के जंगी लाट किचनर से विरोध हो गया था और ब्रिटिश सरकार ने कर्जन का त्यागपत्र स्वीकार किया था, इस घटना को गुप्तजी ने व्यंग्यमयी शैली में 'बिदाई संम्भाषण' शीर्षक चिट्ठे में लिखा है। "अब देखते हैं कि जंगी लाट के मुकाबिले में अपने पटखानी खाई, सिर के बल नीचे आ रहे। आपके स्वदेश में वही ऊँचे माने गए, आप को साफ नीचा देखना पड़ा, पदत्याग की घमकी से भी ऊँचे न हो सके।"[14]

इन 'चिट्ठों' में सुयोग्य शब्द-चयन, कहावतें, मुहावरों का प्रयोग मिलता है। संस्कृत निष्ठ भाषा और संक्षिप्त वाक्य रचना का सुन्दर तारतम्य है। इनमें 'चिट्ठा शैली' तथा 'कथात्मक शैली' का सुन्दर प्रयोग किया हैं।

'शिव शम्भु के चिट्ठों' के अतिरिक्त गुप्तजी ने 'कर्जनशाही' शीर्षक से बड़े व्यंग्य लेख लिखे हैं। इनमें लोर्ड कर्जन के अत्याचारों का वर्णन व्यंग्य की अलंकारिक शैली में किया गया है। 'मेले का ऊँट' नामक निबंध में मारवाडी समाज की कुरीतियाँ, स्वार्थपरायणता एवं दुराचरणों पर 'मारवाडी ऐसोसियेशन' द्वारा करारा व्यंग्य प्रहार किया है। 'आशीर्वाद' निबंध में बंग-भंग पर जनता पर किये जानेवाले अत्याचारों के संदर्भ में व्यंग्य हुआ है। 'हँसी-खुशी' नामक व्यंग्य निबंध में हास्य की महत्ता का वर्णन है। गुप्तजी ने 'आत्माराम' नाम से साहित्यिक व्यंग्य भी लिखा है।

गुप्तजी के व्यंग्य निबंधों की भाषा में प्रतीकात्मकता मिलती है। अप्रस्तुत के द्वारा प्रस्तुत की प्रतीति बड़ी ही सुन्दर और सफल ढ़ंग से कराते है। इनके व्यंग्य निबंधों की शैली भाव व्यंजना के साथ-साथ चमत्कार प्रदान करती है। उचित शब्द-चयन गुप्तजी की शैली की मुख्य विशेषता हैं। इन्होंने निबंधों में

नये-नये शब्दात्मक प्रयोग भी किये हैं।

गुप्तजी ने व्यंग्य के माध्यम से राजनीति, समाज और शिक्षा में चल रहे खोखलेपन को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है।

5) राधाचरण गोस्वामी

राधाचरण गोस्वामी ने भारतेन्दुजी की प्रेरणा से 'भारतेन्दु' नामक मासिक पत्र प्रारंभ किया। भारतेन्दु युग के लेखकों में गोस्वामीजी के व्यंग्य निबंध अधिक तीक्ष्ण और समाज एवं मानवी को जागरूकता दिलाने वाले है। जयनाथ 'नलिन' इनकें व्यंग्य के संदर्भ में लिखा है कि - "जब राधाचरण धार्मिक अन्धविश्वासों पर चोट करते हैं, तो उनकी बोली में कबीर के प्राण बजते दीखते हैं। कबीर के व्यंग्य में कटु तीखापन है, गले से उतरते हुए लकीर-सी खिंचती है; गोस्वामीजी का व्यंग्य शहद में डूबा, हँसी में लिपटा और कल्पना से रंगीन है।"[15]

उनका बहुचर्चित व्यंग्य निबंध संग्रह 'यमपुर की यात्रा' है। इसमें गोस्वामीजी ने राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक कुव्यवहारों पर आलोचनात्मक व्यंग्य किया है। इस व्यंग्य निबंध संग्रह में लम्बी कथात्मक शैली एवं स्वप्न शैली का प्रयोग मिलता है। राजनीतिक दमन एवं सामाजिक दुराचरण के बारे में गोस्वामीजी लिखते है - "साहब, प्रथम प्रश्न सुन लीजिये, गौदान का कारण क्या है? यदि गौ की पूँछ पकड़कर पार उतर जाते हैं, तो क्या बैल से नहीं उतर सकते। जब बैल से उतर सकते हैं तो कुत्ते ने क्या चोरी की है? मुझे याद आया कि साहब मजिस्ट्रेट की मेम को एक कुत्ता मैंने दान दिया था, जब गौ यहाँ साक्षात् आ जाती है तो क्या प्रदत्त कुत्ता न आवेगा। मैंने झड़ाक सीटी दी, सीटी सुनते ही मेरा पाला-पनासा प्यारा 'रत्ना' नामी कुत्ता कचहरी के लोगों को हराता मेरे पास आ खड़ा हुआ और मुझे चाटने लगा।"[16]

"स्त्री सेवा पद्धति" निबंध में नारी स्वभाव पर व्यंग्य किया है। 'वैद्य स्तवराज' निबंध में तत्कालीन वैद्यो की मनोवृत्ती का चित्र चित्रित किया है। 'नार्पित स्तोत्र' में नाईयों के कुकर्मों का भाण्डा फोड़ करते हुए व्यंग्य किया है। भारतेन्दु व्यक्तित्त्व एवं साहित्य से प्रभावित गोस्वामीजी ने संस्कृत की 'स्तोत्र शैली' में 'भूषक स्तोत्र', 'नापित स्तोत्र', 'वैद्यराज स्तोत्र', 'रेल्वे स्तोत्र' जैसे व्यंग्य निबंध की रचना की है। इसके अलावा 'मिस्टर बूट', 'होली', 'तुम्हें क्या', 'लल्लू

गाथा' तथा 'मदग्रेंज देव महा महापुराण' जैसे निबंधों में भी व्यंग्य की आभा दिखाई देती है।

गोस्वामीजी के व्यंग्य निबंधों में कठिन समस्याओं के घरेलू उपाय चिताकर्षक शैली में व्यक्त किये गये है।

6) बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन'

'प्रेमधन सर्वस्व भाग - 2' में चौधरीजी के निबंधों का संकलन है। जिनमें इनके व्यंग्य निबंध मिलते है। इन निबधों में समाज में धर्म के नाम हो रहे पाखंड, दुराचार, भेदभाव, कुव्यवहार, अंधविश्वास आदि पर व्यंग्यात्मक प्रहार मिलता है। व्यापारी, विदेशीपन, विदेशी सरकार, उच्च वर्ग की कुलीनता, अंग्रेजों की शिक्षा नीति पर, तत्कालीन परिस्थिति, गरीबों की दुर्दशा, नारियों की दारूण स्थिति, परंपरागत रूढ़ियाँ आदि पर करारा व्यंग्य किया है।

'विधवा विपत्य वर्षा' नामक निबंध में विधवाओं की वास्तविक स्थिति का हृदय द्रवित चित्र उपस्थित किया है। इसमें हिन्दु समाज की परंपरागत रूढ़ियों व कुसंस्कारों की आलोचना की है। बाल विवाह का विरोध करते हुए लिखते है कि - "परन्तु चाहे जिस तरह का ब्याह हो, ख्याल प्रायः दो ही बातों का रहता है, एक तो पण्डित जो कि कुण्डली मिलाने का अर्थात् चाहे अन्धा हो काना, कुबड़ा, लूला, लंगड़ा, काला, कुरूप, मुर्ख, दुष्ट क्या सर्व दोष युक्त क्यों न हो, कुण्डली की विधि मिलने से लक्ष्मी समान रूप-गुण, सम्पन्न कन्या का विवाह कर ही देवेंगे।"[17]

'समय', 'दृश्य रूप', 'पुरानी का तिरस्कार और नई का सत्कार', 'नवीन वर्षारम्भ', 'दिल्ली दरबार', 'भारत के लुटेरे' आदि निबंधों में व्यंग्य की छटा मिलती हैं।

प्रस्तुत युग के निबंधों को पढ़ कर लगता है कि तत्कालीन परिस्थिति पर व्यंग्य प्रहार किया है। अंग्रेज शासकों का आधिपत्य, राजनीतिक उथल-पाथल, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक व्यवस्था पर तीक्ष्ण आलोचनाएँ हुई है।

भारतेन्दु युग के व्यंग्य निबंधों की भाषा संस्कृत निष्ठ रही है। संस्कृत के तत्सम् शब्द एवं संस्कृत पदावलियों का यथा स्थान प्रयोग हुआ है। इसके अलावा देशज, तद्भव एवं विदेशी शब्दों का योग्य प्रयोग मिलता हैं। जिस. तरह इस युग में भी विविधता देखी जाती है। भारतेन्दु ने अपने व्यंग्य निबंधों

में 'स्तोत्र शैली' का सर्व प्रथम प्रयोग किया है। इसी शैली परंपरा को राधाचरण गोस्वामी ने अपनाया है। भट्टजी ने 'नुस्खा शैली', गुप्ताजी ने 'चिट्ठा एवं पत्र शैली' तथा मिश्रजी ने 'परिहास शैली' का प्रयोग अपने व्यंग्य निबंध में किया हैं। इसके अतिरिक्त मुहावरा शैली जैसी शैलियों का इसी युग में विकास हुआ। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से इस युग की भाषा शैली परिमार्जित हो सकी है।

भारतेन्दु युग के व्यंग्य निबंधकारों ने व्यंग्य का तीखा, तीव्र एवं आक्रमक रूप अपनाया। इस युग के व्यंग्य में देशोद्धार और समाजहीत का मुख्य उदेश्य रहा है।

2) द्विवेदी युग (सन् 1900 से 1920 तक)

द्विवेदी युग बीसवी शताब्दी का प्रथम चरण है। मदनमोहन मालवीयजी के प्रयास से हिन्दी को पहली बार सरकारी कार्यालयों में मान्यता प्राप्त हुई थी। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' नामक मासिक पत्रिका प्रकाशित की। यह हिन्दी साहित्य के लिए एक महत्त्वपूर्ण घटना थी क्योंकि "सरस्वती स्वयं मे एक आप्त विश्वविद्यालय बन गई।"[18] इस युग के प्रमुख निबंधकार है - महावीर प्रसाद द्विवेदी, गुलेरीजी, जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी, बाबू गुलाबराय है, जिनके निबंधों में व्यंग्य की धारा विद्यमान होती है।

भारतेन्दु युग के साहित्यकारों में देशोद्धार और समाज सुधार की भावना दिखाई देती है, वह इस युग के साहित्यकारों मे नहीं दिखाई देती। महावीर प्रसाद द्विवेदी के कठोर प्रयास से इस युग की भाषा परिमार्जित हुई, किन्तु भारतेन्दु युग जैसी व्यंग्य शैली का खुलकर प्रयोग अधिक नहीं दिखाई देता। 'सरस्वती' पत्रिका के कारण निबंधकारों की एक समृद्ध पीढ़ी तैयार हुई, जिसने हिन्दी गद्य को वैज्ञानिक रूप प्रदान किया। द्विवेदी युग में व्यंग्य की धारा अवरूद्ध नहीं हुई, बल्कि कम दिखाई देती है। "यह युग व्यंग्य की दृष्टि से बहुत समृद्ध न भी रहा हो, पर तत्कालीन परिस्थितियों का आकलन करने वाला आक्रोश युक्त व्यंग्य जिसमें हास्य का भाव नहीं था, इस युग में भी मिल जाता हैं।"[19]

द्विवेदी युगीन निबंधकारों में व्यंग्य

1) महावीर प्रसाद द्विवेदी

द्विवेदीजी ने लगभग 250 निबंध लिखें हैं, जिसमें विषयों का वैविध्य रहा है। इन निबंधों में कहीं-कहीं पर आवश्यकता अनुसार व्यंग्य का प्रयोग किया है। निश्चल विनोद उनके निबंध में नहीं मिलता है, किन्तु सुधार की दृष्टि से किया गया सोद्‌श्य व्यंग्य जरूर मिल जाता है। द्विवेदीजी के निबंध के बारे में डॉ. उदयभानु कहते हैं कि - "अधिकांश निबंधों की रचना पत्रकार द्विवेदीजी ने की है और उनका प्रधान उद्‌श्य रहा है मनोरंजन पूर्वक 'सरस्वती' पाठकों का ज्ञान वर्धन तथा रूचि परिष्कार कलात्मक अभिव्यक्ति कहीं भी उनकी निबंध रचना का साध्य नहीं हो सकती है।"[20]

अंधव्यवस्था, जातिवाद, अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली, अंग्रेजी शासन, भ्रष्टाचार जैसी धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था पर व्यंग्य किया है। अंग्रेजों के अत्याचारों का वर्णन 'दण्डदेव का आत्म निवेदन' नामक व्यंग्य निबंध में किया है। 'कवि किंकर' नामक निबंध में छायावादी काव्य प्रवृत्ति, छंद योजना आदि पर व्यंग्य किया है। 'म्युनिसिपैलिटी के कारनामें' निबंध में द्विवेदीजी ने नगर निगम के कारोबार, भ्रष्टाचार और भाई-भतिजा वाद पर करारा व्यंग्य किया है। "इस म्युनिसिपैलिटी के चेयरमेन श्रीमान बूचा शाह है। बाप, दादे की कमाई का लाखों रूपया आपके घर भरा है। पढ़े लिखे आप राम नाम ही हैं। चेयरमेन आप सिर्फ इसीलिए हुए है कि अपनी कारगुजारी गवर्नमेंट को दिखाकर आप रायबहादुर बन गयें और खुशामदियों से आठ पहर चौसठ घड़ी घिरे रहें। म्युनिसिपैलिटी का नाम चाहे चले चाहे न चले आप की बला से।"[21]

द्विवेदीजी के व्यंग्य निबंधों में भाषा का परिमार्जित रूप मिलता है। इन्होंने अरबी, फारसी, उर्दू, अंग्रेजी शब्दो के द्वारा व्यंग्य किया है। मुहावरेंदार शब्द प्रयोग तथा व्याकरण की शुद्धता मिलती है। इनके व्यंग्य निबंधों में शैली का साहित्यिक रूप मिलता है। इन्होंने तत्कालीन शिक्षा प्रणाली तथा सामाजिक व्यवस्था पर आलोचनात्मक व्यंग्य किये है।

2) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'

'कछुआ धरम', 'मारेसि मोहि कुठाऊँ', 'सोहम' आदि गुलेरीजी के व्यंग्य निबंध हैं। जिनमें रूढिवाद, ऊँच-नीच के भेदभाव, जातिवाद तथा पलायनवाद

जैसे विषयों पर तीव्र व्यंग्य किया हैं।

'कछुआ धरम' में हिन्दुओं की परंपरागत रूठियों, जात-पात, ऊँच-नीच के भेदभाव की कटु आलोचना की है। गुलेरीजी विष्णु से मित्रता और पलायनवादिता पर व्यंग्य करते हुए लिखते हैं- "व्रज की मार से पिछली गाड़ी भी आधी टूट गई, पर तीन लम्बे डग भरने वाले विष्णु ने पीछे फिर कर नहीं देखा और न जम कर मैदान लिया।"[22]

'मारेसि मोहि कुठाऊँ' में उन्होंने आर्य समाजियों की प्रवृति का विरोध व्यंग्यात्मक ढंग से किया है। गुलेरीजी का व्यंग्य द्विवेदी युग में अधिक तीक्ष्ण, प्राणवान और प्रभावशाली है। यही कारण से भारतेन्दु युग की अपेक्षा द्विवेदी युग का साहित्य अधिक परिमार्जित बन पाया है।

द्विवेदीजी के व्यंग्य में विषयों का वैविध्य देखने को मिलता है, जब कि गुलेरीजी के व्यंग्य निबंधों में विभिन्न भाषाओं के शब्दों की वैविध्यता मिलती है। गुलेरीजी के व्यंग्य निबंधों में विचारात्मक शैली पाई जाती है। कहीं-कहीं व्याख्यान या स्पीच शैली भी मिल जाती है। भाषा-शैली की परिपक्वता के कारण गुलेरीजी के लेखों एवं निबंधों का आनंद विद्वान ही ले सकते है। गुलेरीजी की विनोदपूर्ण वक्रता के कारण कभी-कभी पूरा निबंध व्यंग्यात्मक छटा से युक्त हो जाता है। डॉ. शंकर दयाल चौऋषि ने गुलेरीजी के सम्बन्ध में लिखा है - "व्यंग्य की उद्‌भावना में गुलेरीजी ने शिष्ट और परिष्कृत रूचि का परिचय दिया है। साधारणत: स्थूल दृष्टि से देखने पर उनकी भाषा का सौम्य और प्रशान्त स्वरूप दृष्तिगोचर होता है परन्तु उसमें निहित प्रखर व्यंग्य सीधा हृदय का स्पर्श करता है।"[23]

3) बाबू गुलाबराय

द्विवेदी युग के श्रेष्ठ निबंधकार बाबु गुलाबराय माने जाते हैं। 'ठलुआ क्लब' और 'मेरी असलताएँ' संग्रह में उनके व्यंग्य निबंध संग्रहित हैं। 'विज्ञापन युग का सफल नवयुवक', 'बेकार वकील', 'कम्पोजीटर स्तोत्र', 'समालोचक', 'प्रेमी वैज्ञानिक', 'आलसी भक्त', 'आफत का मारा दार्शनिक', 'निराश कर्मचारी' आदि गुलाबराय के प्रसिद्ध व्यंग्य निबंध है।

गुलाबराय ने डाक्टर, लेखक, वैज्ञानिक, नेता, वकील, चोर, इजेन्ट, नाई, व्यापार, छूआ-छूत जैसे विषयों पर व्यंग्य किया हैं। इनके वैयक्तिक व्यंग्य निबंध

किसी को व्यक्तिगत हानि नहीं पहुँचाते।

'सीमावर्ती चोर' नामक व्यंग्य निबंध में इन्होंने सरकारी अधिकारियों पर व्यंग्य किया है। साहित्य की चोरी करनेवाले, आयकर की चोरी करनेवाले, काम में चोरी करनेवालों पर गुलाबराय ने बडा करारा व्यंग्य किया है। साहित्य की चोरी करनेवालों के बारें में वे कहते है कि - "चोरी छिपाने के लिए बड़ा कौशल चाहिए विशेषकर आज के साहित्य संसार में, जबकि समालोचक - कीट लेखक के अंतस्तल में प्रवेश करके उसकी अनजाने में हुई चोरी का पता लगा लेते हैं।"[24]

गुलाबरायजी के व्यंग्य निबंध की भाषा बोधगम्य, सरल, सुबोध, प्रसाद गुण से युक्त , मुहावरेंदार, लोकोक्तिपूर्ण एवं विविध उद्धरणों से सम्पन्न अर्थमयी है। कहीं-कहीं संस्कृत के सुभाषित और अंग्रेजी वाक्यों का भी प्रयोग मिलता है। वक्रोंक्तियों, व्याज-स्तुति एवं व्याज निन्दा के माध्यम से हास्य - व्यंग्य का सृजन किया है। इनके निबंधों में सांस्कृतिकता और साहित्यिकता के गुण मिलते है। गुलाबराय ने द्विवेदी एवं शुक्ल दोनों युग में अपना साहित्यिक योगदान दिया है।

4) माधवप्रसाद मिश्र

'माधवप्रसाद मिश्र निबंध माला' में मिश्रजी के व्यंग्य निबंध संग्रहित हैं। 'राजा की उत्तमता', 'विद्यार्थी और राजनीति', 'स्वदेशी आन्दोलन', 'खुली चिट्ठी', तथा 'बुराई से भलाई' जैसे निबंधों में राजनीति से संबंधित व्यंग्य की झलक दिखाई देती है।

मिश्रजी के निबंधों में व्यंग्य का कटु, तिक्त और कठोर स्वरूप मिलता हैं देश की तत्कालीन परिस्थिति पर व्यंग्य किया है। इन्होंने सरकारी नीति एवं अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली को ही आर्थिक शोषण का कारण बताया है। इस दरिद्रता का मार्मिक वर्णन करते हुए कहा है कि - "जिस प्रजा की प्रसन्नता के लिए इस देश के प्राचीन नृपतियों ने अपने पुत्र कलत्र को निर्वासित कर दिया था, आज उसी प्रजा के लिए इस देश के राजपुरूष अपने सजातियों को दण्ड देने में भी कुंठित हैं। निर्धनता का यहाँ तक राज्य है कि लाखों आदमी भर पेट खाने को भी नहीं पाते। चीन, जापानादि के भयानक युद्धों में भी उतने मनुष्य हताहत नहीं हुए, जितने यहाँ प्लेग की भेंट हो चूके और होते जा रहे हैं। विद्वान मर रहे

हैं, मुर्ख बढ़ रहे हैं और शिक्षा की जड़ कट रही हैं।"[28]

मिश्रजी के निबंधों में पुराने रीति-रिवाज, मेले, कुंभ, त्यौहार, छूत-अछूत, जाति भेद जैसे धार्मिक एवं सामाजिक विषयों पर व्यंग्य मिलता है। गरीबों पर अत्याचार करनेवाले सामंतों का चित्रात्मक शैली में तीव्र प्रहार किया है। इनके व्यंग्य निबंधों में अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं के शब्दों का अधिक प्रयोग मिलता है। इनकी भाषा में प्रौढ़ता और ओजस्वीता के गुण है। इनके व्यंग्य निबंधों में विषय के साथ भाषा शैली में भी विविधता देखने को मिलती है।

द्विवेदी युगीन अन्य निबंधकारों में व्यंग्य

जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी का 'विचित्र विवरण' (1908), 'अनुप्रास का अन्वेषण' (1918), 'विचित्र वीर' (1929) नामक अति प्रसिद्ध निबंध संग्रह है। इसमें इनके वाणिज्य व्यापार, साहित्य, धर्म, आश्रय, भोजन आदि सब के वर्णन में अनुप्रास द्वारा व्यंग्य उत्पन्न किया है। चतुर्वेदीजी ने असंगत नामों में संगत बिठा कर हास्य-व्यंग्य उत्पन्न करने का पार्दुभाव किया। इनकी शैली अलंकारिक और भाषा में धारा वाहिता है, जो इनके व्यंग्य निबंधों को गति देती है।

सरदार पूर्णसिंह ने व्यंग्य निबंध बहुत ही कम लिखे हैं। किन्तु वे उद्देश्यपूर्ण रहे हैं। 'मजदूरी और प्रेम' नामक निबंध में इन्होंने आर्थिक समस्या के संदर्भ में व्यंग्य किया है। धर्म के नाम पर बाह्याण्डम्बर, जातिवाद, भेदभाव आदि पर करारा व्यंग्य किया है। इनका 'ब्रह्म-क्रान्ति', 'आचरण की सभ्यता', 'सच्ची वीरता' आदि व्यंग्य की अनूपम रचना है। पूर्णसिंह ने भले ही छ, सात निबंध लिखे हों, किन्तु वे व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति से पूर्ण है।

विजयानन्द दुबे ने 'दुबे की चिट्ठियाँ' और 'दुबेजी की डायरी' दो व्यंग्य संग्रह लिखे हैं। जिसमें सामाजिक कुरीतियाँ, धार्मिक अंधविश्वासों आदि पर व्यंग्यात्मक प्रहार किये है। पं. गोविंदनारायण मिश्र ने 'आत्माराम की टेंटें' निबंध में अनेक स्थानों पर व्यंग्य का आश्रय लिया है। इसके अतिरिक्त इस युग में रामावतार शर्मा तथा पद्मसिंह शर्मा के व्यंग्यात्मक निबंध उल्लेखनीय है।

द्विवेदी युग में विषयों का वैविध्य तथा भाषा शैली का कौशल्य व्यंग्य निबंधों को अधिक साहित्यिक बनाता है। प्रस्तुत युग में सामाजिक, धार्मिक,

राजनीतिक, व्यक्तिपरक आदि विषयों पर व्यंग्य मिलता है। गुलाबराय जैसे निबंधकार ने साहित्यिक विसंगतियों पर व्यंग्य किया है। अंग्रेजी भाषा तथा अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव होने के कारण इन विषयों पर भी व्यंग्य किया गया।

प्रस्तुत युग के निबंधकारों ने व्यंग्य का प्रयोजन खुलकर किया है। द्विवेदी युग का व्यंग्य निबंध साहित्य पूर्ववर्ती व्यंग्य निबंध साहित्य; समाज की अपेक्षा साहित्य से अधिक जुड़ा हुआ था। इस युग के साहित्य में गरिमा और गंभीरता का समावेश हुआ।

3) शुक्ल युग (सन् 1920 से सन् 1947 तक)

शुक्ल युग के निबंधों में हास्य-व्यंग्य के स्थान पर वैचारिक, गंभीर एवं विश्लेषणात्मक प्रवृत्ति मिलती है। भारतेन्दु युग के निबंधों में व्यंग्य के द्वारा समाज सुधार की जो प्रवृत्ति मिलती थी वह शुक्ल युग में कम हो गई और उसका स्थान साहित्यिक निबंधों ने ले लिया, इसलिए उनमें व्यंग्य की प्रवृत्ति कम ही द्रष्टिगत होती है। इस युग में देश की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सास्कृतिक स्थिति सुधर रही थी। भारतेन्दु युग के व्यंग्य लेखको के लिए जो व्यंग्य की पृष्ठभूमि थी वह इस युग में सुधर चुकी थी। फिर भी कई निबंधकारों ने निबंध के द्वारा अंग्रेजी शिक्षा, अंग्रेजी शासन, सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थिति पर कस कर व्यंग्य प्रहार किया है। इस युग में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, माखनलाल चतुर्वेदी, शियारामशरण गुप्त, बेढब बनारसी, वियोगी हरि, हरिशंकर शर्मा, कान्तानाथ पाण्डेय 'चोंच',शिवपूजन सहाय, कृष्णचन्द, ब्रजकिशोर चतुर्वेदी आदि निबंधकारों में व्यंग्य की प्रवृत्ति मिलती हैं।

शुक्ल युगीन निबंधकारों में व्यंग्य

1) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

चिन्तामणी भाग-१ निबंध संग्रह में शुक्लजी के व्यंग्य निबंध संग्रहित हैं। जिनमें 'श्रद्धा और भक्ति', 'लोभ और प्रीति', 'क्रोध' आदि व्यंग्य निबंध है।

श्रद्धा और भक्ति निबंध में तत्कालीन मोल-तोल और नकलीपन के बारे में व्यंग्यात्मक प्रहार किया है। शुक्लजी के निबंधों में व्यंग्य तिव्रता के साथ

कहीं पर गंभीर तो कहीं पर चुटिला बन जाता है। 'लोभ और प्रीति' निबंध में लोभियों के प्रति व्यंग्यबाण चलाते हुए कहा है कि - "लोभियों! तुम्हारा आक्रोश, तुम्हारा इन्द्रिय निग्रह, तुम्हारा मानापमान समता, निर्लज्जता, तुम्हारा अविवेक, तुम्हारा अन्याय विगर्हणीय है। तुम धन्य हो! तुम्हें धिक्कार है!"[26]

ढ़ोंगी, देश प्रेमी, कंजूस लोग, मशीन युग के दुष्परिणाम, धर्म के नाम पर आडम्बर, शास्त्रज्ञ, कविधर्म आदि विषयों पर शुक्लजी ने व्यंग्यात्मक निबंध लिखें है। इनके व्यंग्य निबंधों में संस्कृत, उर्दू, फारसी, अरबी, देशज तथा अंग्रेजी भाषा के शब्दों का यथास्थान प्रयोग मिलता है। विषयों के वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर हमें इनके व्यंग्य निबंधों में वैचारिक एवं विश्लेषणात्मक शैली मिलती है।

2) माखनलाल चतुर्वेदी

'साहित्य देवता (1943), अमीर इरादे गरीब इरादे (1960), समय के पाँव (1962), चिंतन की लाचारी (1965) आदि निबंध संग्रह में व्यंग्यात्मक निबंध मिलते हैं।

चतुर्वेदीजी को आचार-विचार तथा वर्ताव में जो बात खटकती थी, उस पर वे व्यंग्य प्रहार करते थे। ढ़ोंगी और बनावटी लोगों पर कसकर व्यंग्य बाण चलायें है। 'वसुधा का पालतू काव्य' नामक निबंध में क्षणजीवी साहित्यकारों पर करारा व्यंग्य प्रहार किया है। 'युग और कला' तथा 'संदेशवाहक' निबंध में भी व्यंग्य की झलक मिलती है। साहित्य एवं साहित्य से जुड़े लोगों पर माखनलाल चतुर्वेदी ने अधिक व्यंग्य लिखे हैं।

जो साहित्यकार अपनी मौलिक रचना निर्मित नहीं कर सकते, फिर भी वे साहित्य के ठेकेदार बन जाते हैं, उनके लिए चतुर्वेदीजी लिखते है कि - "जिन्हें साहित्य निर्माण की नहीं केवल साहित्य परोसने की आदत है, वे महापुरूष हो सकते हैं, किन्तु साहित्यिक नहीं।"[27]

चतुर्वेदीजी ने व्यंग्य निबंध में 'वक्रोक्ति' और 'वीट' का आश्रय लिया है। इनके व्यंग्य निबंध में भाषा अलंकृत एवं लयबद्ध है। उर्दू, अंग्रेजी तथा संस्कृत भाषा के शब्दों का यथा स्थान प्रयोग मिलता है। इन्होंने सूत्र वाक्य का प्रयोग किया है। जैसे - "अभाव में मानवभाव हरे होते हैं, मानव आविष्कार उगते हैं।"[28] इनकी शैली में वैचारिक सूत्रात्मकता देखी जा सकती है।

3) शियारामशरण गुप्त

गुप्तजी का 'झूठ-सच' (1939) नामक निबंध संग्रह व्यंग्य की दृष्टि से उल्लेखनीय है।

'अन्य भाषा का मोह' निबंध में अंग्रेजों तथा अंग्रेजी भाषा से रंगे भारतीय पर व्यंग्य किया है। 'बहस की बात' में विश्वविद्यालय की शिक्षण प्रणाली तथा न्याय व्यवस्था पर व्यंग्य प्रहार किये है। 'घोड़ाशाही' निबंध में गुप्ताजी ने मशीन युग के साथ मनुष्य की यांत्रिकता का उल्लेख करते हुए व्यंग्य किया है कि – "सामन्तसाही में जो घोड़ा था, वह पशु था, पशु स्वयं बुरा नहीं, पशुता ही उसकी बुरी है। इस युग का घोड़ा पशु नहीं है। यह सौभाग्य है या दुभाग्य है?"[29]

गुप्तजी ने अपने व्यंग्य निबंध में 'सूत्रात्मक शैली' का प्रयोग किया है। यथा – 'तर्क जन्म से ही क्षत्रिय है'।, 'कवि विधाता की असाधारण सृष्टि है।' कहीं-कहीं पर इन्होंनें वक्रोक्ति शैली में भी व्यंग्य किया है। इनके व्यंग्य निबंधों में वैयक्तिकता छाई हुई है। व्यंग्य निबंधों में संस्कृत निष्ठ शब्दों का प्रयोग मिलता है। आकर्षक भाषा शैली के कारण इनके व्यंग्य निबंधों में विविधता देखने को मिलती है।

4) बेढ़ब बनारसी

बेढब बनारसी का मूल नाम कृष्ण प्रसाद गौड़ है। इन्होंने 'मुझे याद है' तथा 'हुक्का पानी' (संवत् 1947) जैसे व्यंग्य संग्रह लिखे हैं। 'हुक्का पानी' संग्रह में इनके 30 व्यंग्य निबंध संग्रहित है। बेढब बनारसी की गणना स्वतंत्र्यता पूर्व काल तथा स्वातंत्र्योत्तर काल दोनों में कर सकते हैं।

बेढब बनारसी ने 'बूरे फँसे मीटिंग में' निबंध में नेताओं की भाषण प्रणाली पर करारा व्यंग्य किया है। इनके व्यंग्य प्रहार से कवि भी नहीं बच पाये है। 'कविता और कवि संम्मेलन' निबंध में व्यंग्यात्मक ढंग से कहते है कि – "कवि होने से और जगत का लाभ होता है या नहीं, परन्तु कागज के करखानों, स्याही की कम्पनियों और डाक विभाग को तो अवश्य ही लाभ होता है।"[30]

स्वतंत्र्यतापूर्व काल में भारत के किसानों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। साहूकार लोग गरीब किसानों पर अत्याचार किये जा रहे थे। इसी स्थिति के संदर्भ में बेढब बनारसी ने 'उधार का सौदा' नामक निबंध में साहूकारों के

अत्याचार समक्ष अपने तीव्र व्यंग्य प्रहार प्रदर्शित किये हैं। इनके निबंध में सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें कभी भी नीरसता नहीं आ पायी है। बनारसी ने नेता, साहूकार, स्वार्थीलोग, ऐनक, अन्याय, अफसर, समाचार पत्र, सेनापति, कवि आदि विषयों के संदर्भ में करारे व्यंग्य लिखे हैं। इनके व्यंग्य निबंधों की भाषा प्रसाद गुण युक्त है। व्यर्थ का शब्दाडंबर कही भी देखने को नहीं मिलता। इन्होंने साहित्यिक, राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक एवं वस्तुपरक विषयों पर व्यंग्य निबंध लिखें हैं।

5) वियोगी हरि

वियोगी हरि का मूल नाम हरिप्रसाद द्विवेदी है। 'भावना', 'अन्तर्नाद', 'ठंडे छींटे', 'तरंगिणी', 'साहित्य-विहार' आदि इनके निबंध संग्रह है। इन निबंध संग्रहों में कहीं-कहीं पर व्यंग्य निबंध मिलते है।

ढोंगी, पाखंडी, आस्तिक, धार्मिक क्रियाकांडों को जाननेवाले लोगों पर वियोगी हरि ने करारा व्यंग्य किया है। 'दीनों पर प्रेम' निबंध में गरीबों पर झुठा प्रेम दिखानेवाले अमीर लोगों पर व्यंग्य किया है - 'हम तो दीन-दुर्बलों को ठुकरा-ठुकरा कर ही आस्तिक या दीनबन्धु भगवान का भक्त आज बने बैठे है। दीनबन्धु की ओट में हम दीनों का खासा शिकार खेल रहे हैं। कैसे अद्वितिय आस्तिक हैं हम। न जाने क्या समझकर हम अपने कल्पित ईश्वर का नाम दीनबन्धु रखे हुए हैं, क्यों इस रद्दीनाम से उस लक्ष्मीकान्त का स्मरण करते है।"[31]

वियोगी हरि ने अपने व्यंग्य निबंधों में संस्कृत एवं उर्दू शब्दों का प्रयोग अधिक किया है। अलंकारप्रधान शैली के कारण इनके व्यंग्य निबंध में अतिशयता आती है जिनके कारण साधारण लोग समझने में असमर्थ होते है। इनके निबंधों में परिचयात्मक एवं आत्म व्यंजक शैलियाँ दृष्टिगत होती है। जो इनके व्यंग्य निबंधों की विशेषता है।

6) हरिशंकर शर्मा

'चिड़िया घर', 'पिंजरा पोल', 'मन की मौज', 'मटकाराम मिश्र', 'गड़बड़ गोष्ठी', 'पाखंड प्रदर्शिनी' (1942), 'स्वच्छन्द सन्मेलन' आदि हरिशंकर शर्मा के निबंध संग्रह है। जिनमें कुछ निबंध प्रधान है और कुछ हास्य-मनोरंजन प्रधान

है।

इन्होंने सामाजिक विषयों पर, तत्कालीन शिक्षा प्रणाली, साहित्यिक, स्वार्थी राजनीति, चोरबाजारी, कालाबाजारी, धार्मिक आदि विषयों पर व्यंग्यात्मक निबंध लिखे है। 'पिंजरापोल' व्यंग्य निबंध में सामाजिक बुराईयों पर कठोर व्यंग्य किया है। इस निबंध में शर्माजी ने व्यक्ति, समाज, व्यवसाय आदि का व्यंगात्मक चित्रण खींचा हैं। 'बंचक विश्वविद्यालय' निबंध में साहित्यकारों पर व्यंग्य किया है।

'भारतीय मुच्छ मुण्ड-मण्डल' में मुच्छहीन प्रणाली की हास्य-व्यंग्यात्मक ढंग से प्रशंसा की है। जैसे-"धार्मिक संसार ही नहीं, राजनैतिक जगत का ही मूलाहिजा फरमाइए..... दूर ही क्यों जाते हो वर्तमानकाल में आँखें पसार कर देखिए, सी.आर.दास, मोतीलाल नेहरू, श्रीनिवास शास्त्री, इत्यादि सैकड़ों 'मुछमण्ड दल' के अनुयाई है। यह निर्मच्छुता साहित्य क्षेत्र में भी विहार करने लगी हैं। आप गौर से देखें, बदरीनाथ भट्ट, लक्ष्मीधर बाजपेई, वियोगी हरि, शिवप्रसाद गुप्त, कृष्णकान्त मालवीय..... साहित्य सेवियों के मुँह से मूछें..... के सींग की तरह उड़ गई और उड़ती जा रही है।"[32]

'मन की मौज' व्यंग्य निबंध में नाटकीय कथोपकथन शैली का प्रयोग किया है। 'पैरोडी पद्धति' के आधार पर 'परिहास-पद्य पाढ़न्त' व्यंग्य निबंध का सृजन किया है। सामासिकता तथा अनुप्रासिकता शर्माजी के व्यंग्य निबंध की शैली की विशिष्टता है। साधारण का असाधारण रूप में वर्णन तथा व्याजस्तुति का यथास्थान प्रयोग किया है। इसके कारण इनके व्यंग्य निबंध रोचक और आकर्षक लगते है।

7) कान्तानाथ पांडे (चोंच)

'छड़ी बनाम सोटा' (1939) और 'चूना घाटी' (1942) पांडेजी के अत्यंत प्रसिद्ध व्यंग्य निबंध संग्रह है।

'मेरी पैन्सिल' नामक निबंध में पाण्डेयजी ने व्यंग्यात्मक शैली में लिखा है कि - "पैन्सिल शव्द किस भाषा का है, यह तो आप को डाक्टर मंगलदेव शास्त्री बतलावेंगे, पर मैं आपको इतना अवश्य ही बतला दूँगा कि मेरे पास एक पैंन्सिल है।..... अभी उस दिन सुप्रसिद्ध कलाविद् रामकृष्णदासजी मुझसे यह पैंसिल कला भवन में रखने के लिए माँग रहे थे। आखिर उन्हें कब तक

टकराऊँगा। एक न एक दिन वह बाबू झटकूराम की तरह इस पैंसिल को मुझसे झाटक ही ले जायेंगे। राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त की पगड़ी, कवि सम्राट पं. अयोध्यासिंह उपाध्याय की दाढ़ी के काले बाल, मुन्शी अजमेरी के पायजामे का इजारबन्द, प्रसादजी का लंगोटा, सुभद्राकुमारी चौहान का फटा जन्कर, बा. जगन्नाथ प्रसाद 'भानु' की शेखानी तथा गोपालराम गहमरी का अंगोछा आखिर वे लोग ले ही गए।"[33]

पांडेजी ने अपने रूचिपूर्ण व्यंग्य के माध्यम से अस्वाभाविक वस्तु तथा अतिरंजित घटनाओं को स्वाभाविक और मनोरंजक बनाया है। इनके व्यंग्य निबंधों में अरबी, फारसी तथा देशज शब्दों का यथा स्थान प्रयोग मिलता है। भाषा प्रसाद गुण से युक्त है। व्यंग्य निबंधों में ज्यादातर वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है। इन्होंने व्यंग्य निबंधों के अतिरिक्त सफल हास्य-व्यंग्यात्मक कहानियाँ भी लिखी हैं।

8) शिवपूजन सहाय

'गुरौवत महारानी की जय', 'प्रोपेगन्डा-प्रभु का प्रताप', 'मेरी राम कहानी', 'मैं धोबी हूँ', 'मैं रानी हूँ', 'मैं अन्धि हूँ' आदि व्यंग्य निबंध इन्होंने लिखें हैं।

'प्रोपेगन्डा प्रभु का प्रताप' निबंध में प्रोपेगण्डा को प्रभु की उपमा न देकर, उसे प्रभुसत्ता का पूर्ण समावेश बताया है। एक तुच्छ साधारण वस्तु को असाधारण महत्त्व देकर तथा मुहावरेदार भाषा प्रयोग करके निबन्ध को वर्णनात्मक शैली में प्रस्तुत किया है। "इन प्रभुजी का भक्त हुए बिना न कोई चाँदी काट सकता है, न मूंछ पर ताव दे सकता है, न हार में जीत का सपना देख सकता है, न किसी को उलटे छुरे से मुँड सकता है, न मिथ्या महोदधि का मन्थन कर असत्य रत्न निकाल सकता है, न जादू की छड़ी फेर कर गीदड़ को शेर बना सकता है, न छछूँदर के सिर मे चमेली का तेल लगा सकता है, न सूखी रेत में नाव चला सकता है न ढोल में पोल छिपा सकता है, इस दुनिया में कुछ भी नहीं कर सकता।"[34]

'मैं धोबी हूँ', 'मैं रानी हूँ', 'मैं अन्धी हूँ', 'मैं हज्जाम हूँ' आदि व्यंग्य निबंध आत्मव्यंजक शैली में लिखे गये हैं। 'प्रथम पुरूष' में लिखे गये इन निबंधों में व्यंजित व्यंग्य की कटुता को शून्य करने का सफल प्रयास किया है। इसी विशेषता के कारण सहायजी ने पाठकों की आत्मीयता को प्राप्त किया है।

हँसी किसी और पर है तथा हास्य खुद पर ही करके व्यंग्य की सृष्टि की है। सुसंस्कृत हास्य और व्यंग्य, परिष्कृत शैली तथा प्रांजल भाषा का प्रयोग इन्होंने व्यंग्य निबंध में किया है।

9) कृष्णचन्द

कृष्णचन्द ने राजनीतिक एवं सामाजिक विद्रिपताओं पर करारें व्यंग्य प्रहार किये है। 'अखबारी ज्योतिषी', 'अखिल भारतीय हिरोइन्स कान्फ्रेंस', 'सेठजी', 'जनतन्त्र दिवस' आदि हास्य-व्यंग्य पूर्ण निबंध लिखें हैं।

'हिन्दी का नया कायदा' नामक निबन्ध में बच्चों की पाठयपुस्तकों पर तथा बच्चों को पढ़ाने के माध्यम पर अन्योक्तियों द्वारा व्यंग्य किया है। जैसे 'त' अक्षर पढ़ने के लिये तोता दिखाया जाता है, यानी तोतावाला 'त'। इस पर इन्होंने कुछ इस प्रकार व्यंग्य किया है - "बच्चों, तोता उस आदमी को कहते हैं जो अपने मालिक का सधाया हुआ होता है, और वही कहता है जो उसका मालिक उससे कहलवाता है। तुमने अकसर ऐसे तोते देखे होंगे। ये हर जगह, हर देश और हर जाति में पाये जाते हैं, और घरों में, दफतरों में, असेम्बलियों में अपने मालिक के रटाये हुए वाक्य बोलते रहते हैं। सच पूछो तो दुनिया में उन्ही तोतों की हुकूमत है।"[35]

कृष्णचन्द के व्यंग्य निबंधों में व्यर्थ का शब्दाडंबर कहीं भी नहीं मिलता है। भाषा प्रसाद गुण युक्त है और विचारात्मक शैली में व्यंग्य निबंधों की रचना मिलती हैं।

शुक्ल युग के अन्य निबंधकारों में व्यंग्य

ब्रजकिशोर चतुर्वेदी ने 'मिस्टर चुकन्दर' के नाम से व्यंग्य लिखें हैं। 'श्रीमती बनाम श्रीमता' इनका सुप्रसिद्ध निबंध संग्रह है। जिनमें 'श्रीमती' एवं 'श्रीमता' की बातचीत वार्तालाप शैली में लधु व्यंग्य निबंध के रूप में लिखी गई है। इनके निबंधों में स्मित हास्य एवं मृदुल व्यंग्य का सुन्दर चित्रण मिलता है।

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने वैचारिक शैली में व्यंग्य निबंध लिखे हैं। 'उत्सव की महत्ता' नामक निबंध में इन्होंने तत्कालीन परिस्थिति एवं मनुष्य की मनोवृत्ती पर व्यंग्य किया है। इसके अतिरिक्त अंधश्रद्धा, धर्म, रूढ़ि, जाति-वाद आदि विषयों पर भी व्यंग्य निबंध लिखें हैं।

रूद्रदत्त शर्मा ने हास्य व्यंग्य निबंध में स्वप्न और कल्पना का दामन पकडके भारतेन्दु और राधाचरण गोस्वामी की परंपरा को आगे बढ़ाया है। 'स्वर्ग में सब्जेट कमेटी' निबंध में कल्पना शैली द्वारा व्यंग्य किया है। 'कण्ठा जनेऊ' निबंध में विरोधियों के सिद्धांतों पर व्यंग्य बाण छोड़े है। इनके व्यंग्य निबंधों की भाषा संस्कृत प्रधान है। अलंकार और अनुप्रसों से बोजिल शैली का प्रयोग किया है।

विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' ने बालमुकुन्द गुप्त की 'चिट्ठा शैली' को अपनाया। इन्होंने 'दुबेजी की चिट्ठियों' रूप में हास्य व्यंग्यात्मक पत्र लिखें है। जो मनोरंजक एवं हास्य रस से भरपुर है। इनके निबंधों का स्वरूप पत्र शैली के रूप में हैं।

अन्नपूर्णानन्द शर्मा ने शिवपूजन सहाय की तरह आत्मव्यंजक शैली में व्यंग्य निबंध लिखे है। 'प्रकाशक-पंचदशी' तथा 'कविता खण्ड' निबंध में साहित्यिक व्यंग्य प्रहार किया है। किशोरीलाल गुप्त ने 'झूठ बोलने की कला', 'कविता कैसे लिखे?' 'विचित्र दिक्षान्त समारोह' जैसे व्यंग्य निबंध लिखे हैं। कौतुक बनारसी ने 'साहित्यिक ठग', 'अखिल स्वर्गीय कवि सम्मेलन', 'सरपटवादी', 'साहित्यिक सम्मेलन', 'भावी कवियों के पत्र' आदि व्यंग्य निबंध लिखे हैं। बनारसीजी ने अस्वाभाविक घटनाओं को वर्णनात्मक शैली में प्रस्तुत करके हास्य-व्यंग्य उत्पन्न किया है।

शुक्ल युग में व्यंग्य निबंधकार साहित्यिक चेतना से प्रभावित थे। "दृष्टिकोण की व्यापकता से विषय की विशदता, सुलझें विचारों से शैली की सहजता का स्वयं समावेश हुआ। संक्षिप्तता में ही मार्मिक शक्ति तीक्ष्णता सन्तिविष्ट हुई।"[36]

भारतेन्दु युगीन स्तोत्र, पत्र एवं चिट्ठा शैली शुक्ल युग में आते-आते गंभीर एवं परिपक्व देखाई देती है। तत्सम्, तद्भव, देशज शब्दों का प्रयोग में इस युग के व्यंग्य निबंधों में हुआ है। भारतीय समाज की रूढ़िवादी परंपराओं का इस युग में आते-आते सफाया होता गया। इसलिए धार्मिक विषयों पर कम व्यंग्य मिलतें हैं। किन्तु सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक विषयों को लेकर व्यंग्य किये गये है, जो तत्कालीन परिस्थिति को उजागर करते है।

4) स्वातंत्र्योत्तर युग (सन् 1947 से सन् 1960 तक)

सन् 1947 में भारत को स्वाधीनता प्राप्त हुई। भारत की जनता ने जिस आजाद देश का सपना देखा था, वह पल भर में ही पानी के बुदबुदों की तरह अदृश्य हो गया। देश की आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थिति ठीक नहीं थी। मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाने की बजाय पाशविक प्रवृत्तियों को बढावा मिला। भारतीय संस्कृति एवं धर्म का हनन होते दिखाई दिया। डॉ. मु. ब. शहा के अनुसार - "ठगा गया वह सामान्य आदमी, जिसने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये सब कुछ दे दिया था, स्वयं नंगे होकर जिसने आगन को वस्त्रांकित, सुघड़ एवं सुन्दर होने के लिये अपने वस्त्र, अपना खून, अपने सपने अर्पित कर दिये थे। ठगा गया वह, साहित्यकार, जो 'कलम का सिपाही' था, 'साहित्य को जीवन के आगे चलनेवाली मशाल' मानता था, जिसके लिए 'मनुष्य ही साहित्य का एक मात्र लक्ष्य था, जिसके लौह लेखनी पारतंत्र्य की बेड़ियाँ काटने के लिए और नये समाज के निर्माण के लिये आग उगलती थी। इस ठगी की प्रतिक्रिया साहित्य में व्यंग्य की तीव्रता का एक प्रधान कारण है।"[37]

देश एवं समाज की संधर्षमयी परिस्थिति को देखकर इस युग का साहित्यकार व्यंग्य करने को प्रेरित हुआ। इस युग में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, अज्ञेय, प्रभाकर माचवे आदि के निबंधों में व्यंग्य का स्वर गुंजित होता है।

स्वातंत्र्योत्तर युगीन निबंधों में व्यंग्य

1) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के विवेचनात्मक एवं समीक्षात्मक निबंधों में व्यंग्य की झलक मिलती हैं। व्यंग्य द्वारा निशाने पर चोट करने की कला में द्विवेदीजी माहिर है। इनका व्यंग्य पढते ही सीधा हृदय पर चोट करता है। 'कल्पना' तथा 'अशोक के फूल' निबंध संग्रह में इनके कई व्यंग्य निबंध संग्रहित है। 'तत् किम', 'नई समस्याएँ', 'पंडितों की पंचायत', 'गतिशील चिन्तक', 'हिन्दी तथा अन्य भाषाएँ', 'नाखून क्यों बढ़ते हैं?', 'शिरीष के फूल', 'भगवान महाकाल का कृष्ठ नृत्य', 'साहित्य का मर्म', 'अभी रूकने का समय नहीं आया', 'अशोक के फूल', 'घर छोडने की माया' जैसे द्विवेदीजी के व्यंग्यात्मक निबंध हैं।

'जब कि दिमाग खाली है' निबंध में हिन्दुओं की धार्मिक संकीर्णता,

रूढिचूस्तता, मिथ्यांडंबर, सांप्रदायिकता तथा भारत की प्राचीन व्यवस्था पर करारा व्यंग्य प्रहार किया है। ..... यहाँ लोगो के कुत्ते बिल्लि से भी बदतर माना जाता है क्योंकि वे हिन्दु है। यहाँ विधवाओं को फुसलाया जाता है और गर्भपात भी कराया जाता है, क्योंकि वे हिन्दु हैं। यहाँ वेश्याओं को मंदिर में ले जाया जाता हैं, पर सती अन्त्यज रमणियों को प्रवेश नहीं करने दिया जाता क्योंकि वे हिन्दु है। यहाँ अन्याय को न्याय कह कर चला दिया जा सकता है।"[38]

'अशोक के फूल', 'शिरीष के फूल', 'नाखून क्यों बढ़ते हैं?' जैसे उल्लेखनीय व्यक्तिपरक व्यंग्यात्मक शैली के निबंध कहे जा सकते है। 'काल्पनिक वार्तालाप शैली', 'भाषण शैली', 'यात्रा शैली', 'कथात्मक शैली', 'संस्मरणात्मक शैली', 'प्रचारात्मक शैली', आदि शैलियों का प्रयोग द्विवेदीजी के व्यंग्य निबंधों में मिलता हैं। इन्होंने व्यंग्य निबंधों में मुहावरों तथा सूक्तियों का प्रयोग कलात्मक रूप से किया है। संस्कृत की तत्सम् शब्दावली से लेकर अरबी, फारसी, देशज तथा तद्भव शब्दों का यथा स्थान प्रयोग किया है।

द्विवेदीजी ने मनुष्य के अंदर बसी पाशविक प्रवृत्ति को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। द्विवेदीजी ने ज्यादातर सामाजिक, धार्मिक एवं साहित्यिक व्यंग्य निबंध लिखें हैं, जिसमें मानव कल्याण की भावना अधिक रही हैं।

2) सच्चीदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

'सबरंग' (1956) निबंध संग्रह में अज्ञेयजी ने 'कुटिटचातम्' नाम से व्यंग्य किया है। इस संग्रह के निबंधों में कल्पना तत्त्व के साथ-साथ वैचारिकता भी समाहित हुई हैं।

'मार्गदर्शक' व्यग्य निबंध में लखनऊ की एक सडक पर रास्ता भूल गये लेखक की मन:स्थिति पर व्यंग्य किया है। लेखक राहगीरों से पता पूछते है। उनके अपने प्रश्न का यह उत्तर मिलता है। "वह जो बहुत बड़े-बड़े दो लाल बोर्ड हैं न, जिस पर छः - छः फुट के अक्षरों में लिखा है 'खाल, खुजली' वहां से बाएं को मुड जाइये। वहां एक रास्ते के सिर पर बहुत बडे बोर्ड पर लिखा है 'डोंट वाक टु योर डेथ' और मोटर के नीचे गिरते एक आदमी का चित्र है। उसी सड़क पर हो लीजिये, कोई पचास कदम आगे जाकर एक पक्की दीवार दीखेगी जिस पर चूने से लिखा है, 'नामर्दी - नामर्दी - नामर्दी।'

..... हाँ, उन्ही की छत के ऊपर एक बोर्ड है जिसमें बिजली की बत्तियों से लिखा हुआ है 'न्युरोसिस' बस आप सीधे न्यूरोसिस के बोर्ड के नीचे चले जाइये।..... आप मेरे बताये हुये मार्ग पर चल रहे है, बस सीधे न्युरोसिस के बोर्ड के नीचे चले जाइये - वह आधुनिकता का दूसरा नाम है, और समकालीन जीवों के लिये उपर्युक्त बिल्ला। संसार भर के न्यूरोटिकों एक हो जाओ - तुम्हारे न्यूरोसिस के सिवा और तुम्हारा क्या कोई छीन लेगा?"[39]

'सबरंग' निबंध संग्रह में संग्रहित व्यंग्य निबंधों में बात-चीत की वार्तालाप शैली का प्रयोग किया है। इनमें भाषा प्रसंगानुसार अलंकृत है। इनके निबंध व्यंग्यात्मक होते हुए भी मार्मिक लगते है।

3) प्रभाकर माचवे

'खरगोश के सींग' (1950), 'बेरंग' (1953), 'तेल की पकौड़ियाँ' (1963) माचवेजी के व्यंग्यात्मक लेखों का संग्रह हैं। इनका 'खरगोश के सींग' व्यंग्य निबंध संग्रह सबसे अधिक प्रसिद्ध है।

'मुँह' निबंध में नारी-मुँह किस तरह लगातार चलता रहता है, उस पर हास्यास्पद व्यंग्य किया है। 'छाता' निबंध में पोंगा पंडित के पाखंड पर, 'घूस' निबंध में घूसखोरों पर तथा 'तमाशा' निबंध में नेतागीरी पर व्यंग्य बाण चलाये है। 'कवि-बिना' निबंध में कवियों पर व्यंग्य प्रहार किया हैं। इसके अतिरिक्त 'नंबर आठ का जादू', 'गला', 'गाली', 'बिल्ली', 'पूँछ', 'चाँद', 'वस्त्र', 'एक कुत्ते के डायरी', 'मकान', 'संदेश-बटोरक', 'पत्नी-सेवक संघ', 'जेब' आदि मनोरंजकपरक व्यंग्य निबंध प्रभाकर माचवे ने लिखें हैं।

'एक कुत्ते की डायरी' निबंध में कुत्ते के माध्यम से देश की समाज व्यवस्था पर करारा व्यंग्य प्रहार किया है। कुत्ता द्रवित होकर कहता है कि - 'मैं जानना चाहता हूँ कि हिन्दू क्या चीज हैं? यह किस चिड़िया का नाम है? मेरा पुराना मालिक ईरानी था - और तब भी सुखी था - अब भी हूँ। गुलाम का कोई धर्म नहीं होता - कहते हैं अब यहां के आदमी आजाद हो गये हैं - मगर पैसे की गुलामी तो अभी बाकी ही है। जैसे प्रसन्न होकर मेरी जाति के प्राणी अपनी पूँछ हिलाने लगते हैं, वैसे मैंने कोई विद्वान चरित्रवान, निष्ठावान, धर्मवान (माने जाने वाले) महानुभावों को पैसे की सत्ता के आगे पिघलते हुये देखा है। हिन्दुत्त्व बड़ा है या पूजीतत्त्व।"[40]

माचवेजी के व्यंग्य निबंधों में विषयानुसार शैली प्रयोग हुआ है। प्रसंगो तथा संदर्भों से युक्त निबंधों में भावों तथा व्यंग्य का सुन्दर प्रयोजन किया है। भाषा मुहावरेंदार एवं शब्दों की वक्रता से युक्त है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इनके (व्यंग्य) निबंधों को चिंतन, मनन, अध्ययन और सरसता का सुन्दर समन्वय माना है।

इस युग में आचार्य नंददुलारे बाजपेयी, शांतिप्रिय द्विवेदी तथा महादेवी वर्मा ने व्यंग्य साहित्य में अपना योगदान दिया है। महादेवी वर्मा के व्यंग्य निबंध मार्मिक तो है ही, साथ में तीक्ष्ण एवं कटु भी है। इनके निबंध में नारी संघर्ष, वेदना एवं विषमताओं का कटु सत्य व्यंग्यार्थ की मदद से प्रस्तुत हुआ है।

स्वातंत्र्योत्तर युग में देश की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थिति को लक्ष्य में रख कर व्यंग्य हुआ है। साहित्यकारों को विषय ढूंढने नहीं जाना पड़ा, समय और परिस्थिति के अनुसार ही व्यंग्य करने को प्रेरित हुए है। इस युग के व्यंग्य निबंधों की भाषा शैली विषयानुसार परिवर्तनशील रही है। संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ अंग्रेजी, उर्दू एवं फारसी जैसे विदेशी भाषा के शब्दों की प्रधानता रही है।

साठोत्तर युग के व्यंग्य निबंधकारों का विस्तृत परिचय अध्याय तृतीय के अंतर्गत किया गया है।

निष्कर्ष

व्यंग्य निबंध उद्देश्यपूर्ण होते है जिसमें विचारों के आदान-प्रदान द्वारा आधुनिक युग की विसंगतियों पर प्रहार किया जाता है। व्यंग्यकार जीवन के किसी तथ्य को व्यंग्य द्वारा सीधा उद्घाटित करता है। व्यंग्य निबंध विचारपरक रचना है जिसमें व्यंजनात्मक एवं भावात्मक अभिव्यक्ति होती है। व्यंग्य निबंध की भाषा शैली वक्रोक्ति पूर्ण आकर्षण और प्रौढ़ होती हैं यदि कलात्मक अभिव्यंजना पद्धति पर आधारित हो तो व्यंग्य निबंध अपनी मोहक अदा में और भी अत्याकर्षक मुद्रा धारण कर लेता है।

उपर्युक्त युगों के अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि व्यंग्य निबंध साहित्य उत्तरोत्तर बढ़ता गया है और उनमें परिस्थिति के अनुसार विषयों का वैविध्य रहा है तथा परिष्कृत भाषा शैली का सुन्दर समन्वय देखने को मिलता हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1) डॉ. सुरेश माहेश्वरी, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी व्यंग्य का मूल्यांकन (कानपुर, 1994 (प्रथम), पृ. - 88.
2) डॉ. शेरजंग गर्ग, व्यंग्य के मूलभूत प्रश्न, पृ. - 153.
3) डॉ. उषा शर्मा, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी निबंध साहित्य में व्यंग्य, पृ. - 105.
4) डॉ. आनंद प्रकाश गौतम, हिन्दी के व्यंग्य निबंध, पृ. - 9.
5) डॉ. बापूराव देसाई, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी व्यंग्य निबंध एवं निबंधकार (चिन्तन प्रकाशन) 1987 (प्र.सं.) पृ. - 51
6) डॉ. शान्ति प्रसाद वर्मा, प्रतापनारायण मिश्र की हिन्दी गद्य को देन, पृ. 43.
7) डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी, हिन्दी साहित्य में हास्य रस, (चतुर्थ संस्करण 1985), पृ.99.
8) सं. केसरीनारायण शुक्ल, भारतेन्दु के निबंध, (प्र.सं, संवत् 2008), पृ.94.
9) वही, पृ. - 95.
10) वही, पृ. - 103.
11) सं. घनंजय भट्ट, भट्ट निबंधमाला (प्रथम भाग), पृ. - 137.
12) हिन्दी प्रदीप, जिल्द 28, संख्या 4, अप्रेल 1906, पृ. - 23.
13) सं. विजयशंकर मल्ल, प्रतापनारायण ग्रन्थावली, प्रथम खंड, पृ. - 49.
14) सं. विजयेन्द्र स्नातक, लेखक - बालमुकुन्द गुप्त, 'शिव शम्भु के चिट्ठे, (प्रथम संस्करण), पृ.47.
15) जयनाथ 'नलिन', हिन्दी निबंधकार; पृ. - 98.
16) राधाचरण गोस्वामी, यमपुर की यात्रा, 'नये नासकेत' पृ. 4.
17) बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन', प्रेमधन सर्वस्व भाग-२, पृ. - 186.
18) डॉ. उदयभानु सिंह, महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग, पृ. - 272.
19) डॉ. शेरजंग गर्ग, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य, पृ. 108.
20) डॉ. उदयभानु सिंह, महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग, पृ. - 145.
21) हिन्दी साहित्य का बृहद इतिहास, त्रयोदश भाग, सं. लक्ष्मीनारायण सं. 2002 वि., पृ. - 103.
22) सं. डॉ. जगन्नाथ प्रसाद मिश्र, आदर्श निबंध, 'कछुआ धरम', पृ. - 66.

23) डॉ. रामगोपाल सिंह चौहाण, आधुनिक हिन्दी साहित्य, पृ. - 13.
24) संपादक - पंडित करूणापति, गुलाबराय, ठलुआ क्लब, संवत्-1884, पृ. - 4.
25) माधवप्रसाद मिश्र निबंधमाला खंड - 4, प्रथम संस्करण पृ. - 20.
26) आ. रामचन्द्र शुक्ल, चिन्तामणी भाग-१, संवत 1963, प्रयाग, पृ. - 61.
27) माखनलाल चतुर्वेदी, साहित्य देवता, 'चिंतक की लाचारी', पृ. - 23.
28) वही, पृ. - 21.
29) शियाराम शरण गुप्त, झूठ-सच, (पंचमावृत्ति, 2013 वि.),'घोड़ाशाही',पृ.-131.
30) बेढब बनारसी, हुक्कापानी (1947), 'कविता और कवि संम्मेलन', पृ.-36.
31) डॉ. बापूराव देसाई, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी व्यंग्य निबंध एवं निबंधकार - पृ.-64.
32) हरिशंकर शर्मा, चिड़िया घर, पृ.-91.
33) कान्तानाथ पांडे 'चोंच', मौंसेरे भाई, 'मेरी पैंसिल', पृ. - 81.
34) शिवपूजन सहाय, दो घड़ी, 'प्रोपेगन्डा प्रभु का प्रताप', पृ. - 12.
35) कृष्णचन्द, फूल और पत्थर, 'हिन्दी का नया कायदा', पृ.-125.
36) डॉ. मु. ब. शाह, हिन्दी निबंधों का शैलीगत अध्ययन (1973), पृ.-344.
37) वही, पृ.442.
38) डा. गणपति चन्द्रगुप्त, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, व्यक्तित्त्व एवं साहित्य, पृ.-195.
39) अज्ञेय, सबरंग, 'मार्गदर्शक', पृ.-23-24.
40) प्रभाकर माचवे, खरगोश के सींग, 'एक कुत्ते की डायरी', पृ.-14.